

स्थयीगामयोगसत्र

यद्रविगताः मुख्य अवस्था

रु मूल अन्न निधि

म रु अन्न

आ रु अन्न

यु ३ रु अन्न

स्वा ३ रु अन्न

वि ३ रु अन्न

स्थगिनः सत्राय

रुवसाः द्विश्चउग

निधय वाल्वायि मुख्य

म रु अन्न

रु रु अन्न

रु रु अन्न

रु रु अन्न

रु रु अन्न

स्थगिनः सत्रायद्रवि

नसाः जमनि रुवसा

विधि वाल्वायि मुख्य

आ रु अन्न

यु ३ रु अन्न

स्वा ३ रु अन्न

वि ३ रु अन्न

वि ३ रु अन्न

वाव निधि

१ ३ रु अन्न

१ ३ रु अन्न

१ ३ रु अन्न

१ ३ रु अन्न

१ कंभसिडन, डाहाद्विकदा, सन्नाय हानी, मीरुयहाय
संयुवलीला, रंखगजवा दयव ॥ याखरिन, धनसमूखे ॥ देव
केश दूर्यक्षा, चाकदाश्कलकसि, गुमिनी, यानिडाग ॥ सन्नि
मूथपिठिल्लाने, सन, कषू, यनाका, साल २ न विद्यसहि न दद्याग
धूमस्यसमाय ॥ ॥ दियदचतु पदचव, विविधिदधसंगे
हं। मीनारं गफनासक, सिह संगहन्य विदू ॥ **सुयुचिना ॥** यव
गल्लाने, गिलीकंदल, वनस्ययादि, गवनयुयय, नावायान, च
१ दनकशवा, न, लुय ०, यगवाय, धागमद, मागकिमी, गनवाग

ग्रामवक, विरुडमाद, ग्याकदयिव, कुरुक, वाहात्रस, गत्रससिसका
दि, श्रीमीमजान, महिरव, मगक, नदियादि, मुदि सणि श्रीगग
धनचिना ॥ यायान, पिगवकु, लायमिंग, कषाय, कसिधन्य, ज
वनक, सिहस्यदगलकृष् ॥ गहवूध ॥ वलामधान ॥ दक्षिण
दिस, यवगययस, दलसुानादिवनाश्रगग ॥ वागवानयिरु
वक ग्राम, गिलमूल, कुरुडाल, मरुदकशूल ॥ वनकव
महाकाल, खग, विजयनी, मार्गगजूड, चामूहि ॥ कुरुनाग
॥ चनामधी, वाकवकु, वागसगीद्विकदा, डाहाद्विकदू, नायुन

नवराक न पृष्ठवस

सा गुरु विष्णु देवता वृद्ध देवा सदा यः सीमवानस ना स्त्राद गया ॥
वा १ वा ७ वा ३ वा १२ वा ४ वा २ ॥ अथ वान  पाखंदा, दीद
यूवा, दास देवदा, गुन, हानिदा ॥ सान्नि ॥ अथ वान  स्नान विधि स्नान
काजी युजतु ॥ सिद्ध संसमाय ॥ १ ॥ निवारिमाकलई
विवाह विधि वं सरु, राय अकार्जुनास अ, स्नानस्य गहन विदु
॥ स्वयं चिका ॥ तुलंग, गिवा, स्नान, यथ, यथ, रासन, स्वदेव
गा, महिष, नून लीकरवाद ॥ धन चिका ॥ यम जिव, बाल, ल
क, कदय, मिखायन, पुनि, गन स्यायु, चिकवयु, दस्य विवाह

हमनि, मूलि चर्क वरु, कयाय, स्नान से दूगल कदा ॥ अथ ग्रा
दिवा ॥ वला एनिय यरुल ॥ देवता न भय दिस ग्रागव ॥ वाग
यिरे चर्क, कनिष्क, ल, मूलग वाग, यागुरिवाल, उरु दाव
देवता माग्निष्क, रेलव, सक मागीका, नदि उरु ॥ अथ वान ॥
 वा ७ वा ४ वा ४ वा १ वा ३ वा १७ वा ८ यरुवनस्य, हा
निदयिवा, उद्य शासम क, माग्नि, धन हो, क कनिनाग ॥

पिठिस्तानं वीरु विडिगु खान २ मूर्द्धज २ न विद्यसहि न ॥

खानसमाय ॥ ७ ॥ कर्मचारि धन (खेव) कीलारि गफ

नामर्षिः अलोम्य मूरुल खानः वषस्य दहन विद्रः ॥ स्वयं वि

का ॥ उदकसज नदिः कुरुमुखि रुनिक गवामधमयूय ॥ धन

विना ॥ गिकट मसि मिल ॥ गडयः कखरागु उयकलन

आयदधि धृत मूलर्या धन्य विरुवमु ॥ वषस्य दूगल

१ मिखायर्षि नूयुते ली गथानी साकदय घागरेदनीव कथसाक

वासयुदववः

कैर्ष ॥ विलासि ॥ वागवान सासकास ॥ (ह) वाकल विन

वाद्य नारिगुल ॥ यन्त्रिमदिम सनिय दवगा आगन ॥

यहहहस्यति ॥ निवमाहाकालः कुरुवानः ॥ वा ४ वा

नवा १ वा २ वा ३ वषसहिग स्वत्यमार्ज रावतिः सिमाका स

दवदा वा ७ ययामन निवपूजाः उमामह गधलयूजाः उ

नयथकीया कुरुनाग कर्ष २ यूजा ॥ पिठिस्तानं वा वाहिय

१ रुक्मादादा उभा नगे स्वाकर्ष १ वथा कीया गवकत्रथनमहाउग

यमूखं नयूङ्कत ॥ **द्वयस्य समाक** ॥ ४ ॥ वन्दनं यलीकल्य
सिन्धुधनलुगमनस्तथा गथागथो याधि यलस्यग्रहने विद्
धनचिन्ता ॥ काष्ठद्वय गलराश्र कसूवर्तु जिवसत्रयव
श्रमलं च यलस्यदूगलकर्म ॥ **सप्तचिन्ता** ॥ उदलीश्रगच्छति
द्वयवर्तुग्राहान् यदगमन वनीश्र मधुमती दिसवा
यथा ग्रहणनीश्रल वला नारीयहजमक वायुवेदिस्य
॥ किमीदय श्रीगर्वस्ययु गुरुम निग्राहोथ जिवस्ययु वेकिनीदी

श्रय थवश्रमाक धनवव नसयुहवव ॥
देवताश्रगग ग्रागवागश्रूल यिगुरुम कर्तु श्रीनिसाल
काल जिवसंगय गयल शीलवदाव डक यिसाच ॥
चतुवथयुत यंग यिसाच मागुरु डक स्यग्रहदेव
गा सुकमाणीका विनागक महाकाल यनालीकाश्र वान
॥ **२३** ॥ ग्रागवाश्र ग्राह ग्राश्र ग्राष्ट ग्राष्ट विनाचतुदयिव ध
वयुवर्तुगमन ववनदा कसिगु गसुष्टुगुभा सान्ति ॥ क
श्रगुनहिवयु कडवस्याक डानीग्राग सग्ययश्रव वाकि

वव, नूग्वठसद्याप्रदय, यवयासि श्रुन, श्रुथवश्राका, ह, आधा ॥
कू७१ यस्तुल्यगाको, अलुड, यचलन, मूकयुन, कय,
वायूथदिसदद्यान ॥ यिठिस्तान, हून्दायनिपूड ७ ॥ व
लस्यसमाक ॥ ४ ॥ ॐ यिगिलरनलार, वनव
न्यथयूहीक, सागार्क, काड, सियाक, गाडस्यग्रहनवि
इ ॥ वनचिन्ता ॥ मूकयिवाल, यनडय, सख, यदवन, थ, कि
विणवसु, रुकशाजन, सिधूल, गठस्यद्रगलकृर्ण ॥ स्वयुचि
॥ मोत्रसाक, मिखासाक, करुविरु, कमिधूल, गवयियूव, कृष

ककूदय, हागा२ वासुककूदय, गानकूनिददा, नदिसान, युवा
का ॥ निदिगडग, सय्यगुरु, मय, मय, मरुकमूरव, दूलस्तानवा
कसम्यनि, वाटि विष्टि ॥ यरु ७ ॥ वलाश्रुष्टजागी ॥ उगदि
सदवताश्रगग ॥ आगदुदयसधूल, थकासाक, गिलडवस
ल, यिलेवर्क, मूडिधूडाल, सखवालनागजास, द्वाय ॥ कृण
वान, ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ आ११ आ११ आ१३ दूलयानिजाग, आ१० आ८ आ
आ१७, आ२० ॥ थल, निमादा, नाकदा३ यानिजाग, सान्नि ॥
मध्वनयादा, यदगनह्यायवात इविकइ, नीगवानधाउ ॥

भाव विथयाने युत्री स क्ताय ॥ क व ख स यु ॥
 वरिनि गभुदा, वृषवा द स्यादा, असुदु मिदा, निवहाद
 र्हासिवृगभवदा, कृवदा, कृववदा, धननियूदा ॥ वृकली
 सकल छादादा, नावावमीयूवख ॥ **सानि ॥** युगयुनयिसा
 य, समानसगनवली, स्वस्वविधाननयूजयग ॥ विठि स्ता
 न, सगवैन्यन, माहालक्ष्मियूज ॥ **धूमसमाक ॥** कल
 खसवलीमाल ॥ **८ ॥** **॥ हूनिमृष्टवर्गसमाक ॥**

१ जम्बूकाक्षि द्वाष्टा गृहिला, दक्षिणस्य वाम, वामस्य दक्षि
 न, मृ ऊ यग, युगयुनयस्य नि, वमु ददा नि मानवाय,
 ॥ वृषनक्षत्रे ॥ **॥ अहग ॥** वृषनक्षत्रे कृदू, कल
 वसिगव ॥ बालनिर्दिगव, यदिगव, मृथवा वद ॥ का
 यावा प्रागीया, कालययाय ॥ **॥ बालयहयविवा**
लखीकाय ॥

युलुलीका

गमयाचाननूथय धन साखर ना हा धर्म नयूजग ॥ ना हा
 नक विधान नयूजा म्वा मास मधि वा म्वा मास कस्मि हा म
 धन मधि म्वा मास क्काय ॥ उरुदि स मधी वाक् नायूथान ॥
 वाक् कस्मि साखर थयग ॥ खासि रिग कादूथान काय ॥ गमस
 ना हा हि काय ॥ धिगायाचाननूथय याचाननूथय ॥ उरुदि
 पूर्व दक्षिण यय ॥ ७ ॥ गुरुगि स ॥ ८ ॥ उम्का
 थययग ॥ विदा कायह ॥ ९ ॥ हि

लयहया ॥ ७ ॥ क माध्यकवय ॥ के यह ॥ ८ ॥ गाय मात्रव
 गवनी ॥ ९ ॥ हा थस्याक क्कदय ॥ १० ॥ नास्याक कायव
 सा हासान सावय कादय ॥ नाहान कादय ॥ मिखाय ॥ ११ ॥ न
 माखदन गाय ॥ क्कनि २ किस्मिगानि ग्वजगाय ॥ नक विधा
 मिखाधकदसाय वा ॥ खानखिदू ॥ १२ ॥ ननयूजग ॥ धन साखल
 नक विधानयूजा इमागाद ॥ नक वि ना हा म्वा मास माधि

वाक् दूध, धन, मन्त्रान्, भगवान्, वननयुजः ॥ सिसाम्बा
 द्याय ॥ दक्षिणदि स्थितिनिर्वा ॥ सुदूरा ८ मासः, म्यानवय, गवा
 सदंष्टावाहिलीस गथ ॥ संगवनन हि, धन, कृज, ध, क्वाव
 चतुवल्ध ॥ योगन यूज ७ ॥ म्यान मास नमल्ध ॥ स्वायावानन
 वृथय ॥ २ ॥ वादाथहि वाक् थय ॥ पूर्वदक्षिणदिस्य
 आर्यकाग्रह ॥ २ ॥ धनहाम्, मथ्यक्याय ॥ १ ॥ विविजयिचि

द्रुयाका नयूय वनीयागधनी न कायह ११ द्रुयादयत्रा
 जगापिनिनसनि दक्षिनदि स्यद्रुयान् यज्ञायत्रविव कक्ष्या
 वाः श्यायू मिखा १० ॥ प्रवनिगु गदयू ॥ नक्क विषनन
 थकदसायूवा ॥ ह १० द्रुयाकाउय यूऊनू ॥ नादा म्वात
 मयनीव वादि धेषरावः म्मुद मास वाक् हि थ द्वा
 यूवा नानवार्य वायूः श्यायू ॥ सत य ॥ दक्षिन चतुयथ

क श य म
 न य म
 ल ए आ उ
 म व ड का ० ह वि सा
 स स म वि
 म उ म
 न ग म

का० यानक नवाय ॥ ॥ स्वसा
 शागयाकनिन गहवाय ॥ ॥
 रयायगहयजावालसवानासा मध्यना
 नालीसवानसा सगम ॥ ॥ याय
 गहयजावालसवानसा का० धयारि
 ग्व ॥ ॥ मध्यनालीसयायगहवा न

सा सगमडाकादयि ॥ ॥ गहसयायगहवानसा का
 ० रग्वश्यू ॥ ॥ गहसगुगहवानसा गुगागु र
 का० या ॥ ॥ आदित्यगहसवानसा जाखमदा ॥ ॥
 चनुगहसवानसा चाल्यमद्र ॥ ॥ अगलगाहसवा
 नसा मीननल्यचालीव ॥ ॥ वृधगहसवानसा वृधि
 वाधनयिवा ॥ ॥ रहल्यनिगहसवानसा अह्योन

नि. दक्षिणसिंहकामात्री ॥ ६ ॥ यस्मिन् यदुदगि. यच्छिम
वयवाचाहि ॥ ७ ॥ सकमिषून्मासि. वायुश्च सवर्षं ॥ ८ ॥
यनि ॥ ९ ॥ श्रुष्टमी श्रुमावाणि. ॥ १० ॥ नक्षत्रं महालक्ष्मी
॥ ११ ॥ ए. थदहि न्यशु रु कहं. उ. थ श्रु. गनसु म. ल. क. हं ॥
आगीनिउदयवचास्यय ॥ ॥ दिनमानसयानरागकाय ॥
रागलक्ष्यद्वि विद्यद्वि वलक्ष्मी ॥ गीनउदयक्ष्मी ॥ यिननि

स्यमस्यहं ॥ थनउदयक्ष्मी ॥ यविद्यानिन. वास्यहं ॥ या
गु विदिनमानगमयू ॥ ॥ वाणीयावाणीमानसयानराग
काय ॥ ॥ यमियदा. थ. इ. वा ॥ ॥ गमनयावाल. पूर्व
गस्यवायः. आगीनीया. थ. द्वाचकममाल ॥ ॥ गनिस्थल
गुगुजीदिगसजान. यिनकालउदयक्ष्मिवस्यय ॥ ॥ द
क्षि. ल. थ. गनि. क. ल. वा. म. रा. ग. उ. गु. य. नि. स. उ. य. नू. आ. ह. व.

॥ अक्षि न्यादिनवायमि पूनखया उकनादिशुठमनवः शुनिमरीं
 क। वा। म। म। वि। ड। उ। व। स्त्रीपूनखया धिनजागसाः स्वमिनास
 रु। म। वा। पू। वि। म। पू। ध। उ। स्त्रीपूनखया धिनजागसाः पूरुमाय
 म। म। पू। ड। रु। म। म। पू। स्त्रीपूनखया धिनजागसाः धनयाकि
 राजावा। डग्नवनवाः वेष्ठावाः मित्रवाः ग्रामवाः दगावाः नृग्नवाः थ
 नसः उकनातिशुठरुचसाः महासूरव ॥ पूनखवाः स्त्रीवाः पूनखमायू

उकनालीयमिहं निमक्षनालीसूगक्यं । अक्षानालीशुठयाक आयूपूगार्थ
 दायक ॥ विवाहं नालीशुठ ॥ ॥ उकनालीगगाउर स्वमिश्रणा रुसीहि
 नो विरुलाशमहायानि सुयाहं यावियन्तिना ॥ वेष्ठावा यदिवामि
 मरुत नाम श्री यद्यु मयुडे हे विस्वा विमृते मयुडे शुधुम यडुव
 गममदगयूनकथा । उकनालीगगायण गण विद्यानरुसूरव ॥

छादकास्य मंगलादवति सन्निः श्रुत्य कालश्च यथ्य मय्य ना ॥

१॥२॥३॥१०॥२॥**धर्मराजिष्टादयः॥** ॥३॥४॥५॥

॥ ८ ॥ ११ ॥ धनं वाणि, गीर्वा दयलुर्न ॥ १२ ॥ उशो दय धनं वा
णि ॥ ॥ मासयक्ष निथिना च, निमिलाना च सर्वेषु । उशो

खननकुर्वाणो नगस्य रुलरागु वं७ ॥ वेदार्थनिर्नूयकथा ॥
कदिमनुदिक्का ॥ ॥ वन्द्यग्रस ॥ सफाष्टुजन्मलेश्वरू वरुथ

दशमस्तुथः नवमश्चैतथाचन्द्रः नक्षत्राणां दशान् ॥

सूर्यग्रहस्त ॥ जन्मसफाष्टनरुके दणमस्तु दिवाकरः दृष्टा वि

४ यदा वाङ् न कुर्यात् वाङ् दर्शने ॥ स्वयमेव ॥ ५

एवाचक ॥ ल्याचक्रावृ ॥ मध्वमवेगचिष्ट ॥ दधनाद्रुग ॥ यूरखग

वृक्ष
जि॥ आः श्री वृष्ट ॥ स्त्रीकानि ॥ रीः नः कः ॥ ० ॥ वायव्य

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ यन्त्र धनं सर्व लवक १ राम दृष्टि याद १ रुद्र दृष्टि याद

श्री	२	१	१२	श्री	२	१	१२	श्री	२	१	१२
वृ	३			वृ	३			वृ	३		
७	लग्न	१०	श्राव	७	लग्न	१०	श्राव	७	लग्न	१०	श्राव
८	१	८	८	८	१	८	८	८	१	८	८

लोली दृष्टि याद ॥ अद्विष्ट व का भ या क गिन गरु व विष्ट नी व ल

२	१	१२	सिधु	८	दय	यून	१२	सय	थ	धे	श्री
७	लग्न	१०	मथाम	७	७	सिधु	वली	वा	दा	ना	सिन
८	१	८	मन्	७	७	निव	ली	का	थ	या	क
८	१	८	वक	८	श्रुति	कटि	वा	आ	य	॥	॥

एतद्व्याधवधवसकृधरुवा

दृष २	भूष १	मीन १२
मिथ ३	शु १	क ११
क ७	ग ७	म १०
सि ८	गु १	व १०
शु १	वि १	८

आ मूय धधधधसि

व २	स २	ह २
शु १	म १	न १
व १	क १	च १
ह १	क १	११
शु १	मीन १	१२
म १	उ १	१

आ १० धधधधधधध

सा १	ध १	१
शु १	२८	१
व १	१४	१
ह १	४	१
शु १	२१	१
म १	२०	१

१ मास २ यामकी गह धधधधध

शु १	मा १	वा १
व १	व १	वा १
शु १	व १	वा १
शु १	व १	वा १
शु १	व १	वा १
शु १	व १	वा १

१ व १ क १ वि १ मी १॥ क १ धधधधध

व १	म १	मि १	क १	१॥	स १	८ १	क १	म १	१०
॥	व १	८ १	॥	शु १	॥	क १	१	वा १	१॥
स १	१॥	स १	१॥	र १	वा १	३ १	वा १	५ १	वा १
म १	१	क १	वा १	२ १	उ १	१	शु १	१	वा १
शु १	१	क १	वा १	१	१	१	शु १	१	वा १
शु १	१	क १	वा १	१	१	१	शु १	१	वा १

जागाल्लुष्ट	जागामधम	जागानिकुध	लग्नकायचथेष्ट
अन्वि इष्ट अनरुक्त अवर्ग मन्त्र मन्त्र यून स्य	आरुति युक्त स्वाति विग गन गव धन	विग्न डु मद्य आडा गन गुण कारि	लग्न मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र	मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र	मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र	मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

अग्निरायः पूर्व	मृकुरायः दक्षिण	वधिसायः पश्चिम	धननासः उत्तर
वाच सा म आ गु नक्षत्र	वाच वृ वृ नक्षत्र आ	वाच आ गु म सा नक्षत्र वा	वाच वृ वृ नक्षत्र रु उ
मिथि म दि न द	मिथि म वृ वृ आ	मिथि म वृ वृ आ	मिथि म वृ वृ आ

प्रथम जागया रुल ॥ विस्मृ ३० गूल द्यटि ८ गंध द्यटि १
 या द्यागया द्यटि २ यनी द्य द्यटि ८० वगियाग द्यटि ८० वेध नि
 द्यटि ८० **गुरु कर्मास** थन जाग जाग सा **थ** **थ** द्यटि हि सं
दिन विय ३० ॥ **निधि** वं क गु हा या का : वा न वा रु गु
 हा ८ मृग ८ न द्वा र्ण स न गु हा या की : योग एव ग ना धि क ८ न र्व व ना
 व लं कृ क्षा दिव स गुरु क र्मा सि ॥ **प्रथम** व सु सा ध य य

मनव हानी मय ध



का	नाम	पूरा
००	५	३
७	५	५
वा	य	३

र नियुक्त ४॥ र समुद्र प्रथम राय
 दि स वा दहिने सुख सयति
 य उ क यथ का उ विना सा य
 उ यू वि वा वलु धन र्क र्य ॥
 ४ १ २ १२२५ २४१० ५३११५
न ति थिल र्म न द्वा र्ण जाग वा न ग रु
 दिग ॥ जाग या निनय समा क ॥

धनडाणावनयात ॥ शुभशुभ निनय खडाया दिवचक
अर्थ धर्म काम माका ॥ आदित्यः सामन शा गया दानक ग गिन विवाच
अश्वि राज कलि नादि ॥ नारा नारी डय मरुत जाणा काय चह ॥
यथा पूर्व आडा मर्जन ॥ ॥ अथ द्रुग स्मि न सूर्यः धर्म सी स्मि न
अथ मद्य पूरु उरु वडि मा अथ नारा शव रुग वरु नाना दृष्ट म
विष्णु स्नानि विष्णु रुक्म ग ॥ १ ॥ अथ मा ग दिवाना थ निमाना थ चका

अनु कुरु मूत्र पूर्व म ग सिद्ध काय निन स्य नि अथ काय विद्या
धन शुभ अश्वि उवा यम ॥ २ ॥ अथ मा ग स्मि न शानो च लु मा क
ज्ञान पूरु उरु वव गुरु गने गडा थ गु मि नाराय गणा ४ संध
यना पूरु ॥ ३ ॥ अथ गुरु गनी दा च हानि जाणा शव नदा यूर्ध्व
रुर्ग मवा प्रा नि अश्वि गस्य जाय न ॥ ४ ॥ धर्म गुरु गनी दो च का
य स्म विधा वर्ण न नारा नव हानि थ न र ग्य न जया रु थो ॥

॥८॥ धर्ममाग्ने गगनसूर्यः अथस्य चामृतधनुः । जागकृणाल
नागः सिद्धिजाराथकेयव ॥९॥ आदित्यधर्मसिद्धिच कामाग्ने
चन्द्रमाजदि । विजयसहस्रिजाणां विग्रहं स्वजने ४ सह ॥ १० ॥
धर्ममाग्ने सिद्धिगसूर्यः चन्द्रमाकृणाल गगन । गङ्गाधलरगगर्ग
वसुधैव कुटुम्बकमिदं गथा ॥११॥ काममाग्ने सिद्धिगसूर्यः चन्द्रमाकृ
णाल गगन । कुणजीश्वरवद्याग । जारद्वार्थकेयव ॥ १२ ॥

काममाग्ने गगनसूर्यः अथहिमकवगथा । आत्राग्यः स्वजने ४ सह ॥ १३ ॥
कामगृहगगनसूर्यः धर्मगृहनिशा
कव । जारद्वार्थसम्यन्ताजाणां स्वकुणालीश्वर ॥ १४ ॥
कामसिद्धिगोद्योचरुहीजागारवर्हदा । विग्रहं स्वजने ४ सह ॥ १५ ॥
हियूनयागम ॥ १६ ॥ माकृमाग्ने दिवानाथः अथहिमगमे
सिद्धिग । नकार्यकृणाल गगन ४ सहस्रिनिष्कलेश्वर ॥ १७ ॥

माक्रमाग्नेदिवाना (थः) हिम (मधमसिस्त्रिग) । वाराथसिद्धिस
 यन्ना विजयं च सूर्ययदं ॥ १७ ॥ दिन (मममाक्रमाग्ने हं
 हिम (मोकामसिस्त्रिगो) वदूवादाथकारिस्थः । आगयिजायज्ञा
 यनं ॥ १८ ॥ माक्रमाग्नेस्त्रिगोदोचः । रायं नव विनिद्धि (ग) ७ ।
 रं (मममृक्ना (मयः) जायननगसिगयः ॥ १८ ॥ धनं च नु
 सूर्यनिनयः जाग्रास ॥ ॥ निधिवानवननक्रुणं मकि

कृत्वा निथा ७ ७ सक रिश्रु व द्वागः । (ग) धीरु रुलमूर्यागं ८
 नकनलरागलक्षिः । दिनियं दू ८ खरा जिनि । रुनियवाडम
 माहः । चतु (थ) मिष्टशाडन । यचमं वाडमानस्थः । सष्टचव
 रुवारादः । सकमं शु धनां यानि । ननकुदिनलक्ष् ८ ॥

॥ ०० निदिननक्रुं नकायजाग्रास ॥ ॥ अथन
 त्याच मक्षमडाणा ॥ निधिवाननक्रुणं नोमाक्रुलः थनमा

मादावा, त्याखदका दका, खननय, वास २७ नद थूस ३७ न
 काथूम ७७ न । हुनी, वास ६ राग । दथूस १ राग । काथूस ६
 राग ॥ वास ७ न्य ३ वसा : कार्ज् थय वायूव ॥ दथूस ७ न्य ३
 वसा : सफ्यारय दयूव ॥ अकस ७ न्य ३ वसा : धननास : इयू
 ॥ आदिर्, मथर्, अकस : सयदगसा : जसवृद्धि
 धनमाननार ॥ **०० गिजाया यानिनं विवाज समाक ॥**

अग्निन्यादिननिय, धनद्वारा, मानन्या या
 नराग, स्वस्ववर्षवर्षागीनी वर्षन्याम
 यासी, स्ववर्षनानीय, कागीनीदशमय
 १ **मंगला** उद्यविधिदायनी ४ **राधीका** यणधनयाफि
 २ **विर्गना** याधिदू ४ स्व ४ **उला** हनिदू ४ स्व
 ३ **धन्या** मिणधनयाफि १ **सिधा** कार्ज् सिद्धिमान
 ३ **रमीली** रमीयसर्वनादिस ४ **संकना** याधि मयूरुल



१ वागमूय निरु
 जिन दिन वागी
 दिन १० वागी १०
 मुख्य अथवा वष
 दि १२ वागी ४
 दि ४० वागी १
 दिन वागी ८
 मुख्य दिन महर्न
 दि २१ वा २०

 दि ४० वा १२
 दि १७ वा २१
 नजिद नि १२ मा
 दि १८ वा ३०
 दि १४ वा २०
 दिन १० वा १४
 दि १० वागी ४
 दि ८ वागी ११

